Raga of the Month August 2026- Raga Janaranjani

राग जनरंजनी

जनरंजनी यह कर्नाटक संगीत का लोकप्रिय राग है। इस रागको हिंदुस्तानी संगीत में प्रचार में लाने का प्रयास दो प्रथितयश गायकोंने किया है- ग्वालियर संस्थानके राजगायक पंडित बालासाहेब उमड़ेकर "कुंडलगुरु" और आचार्य रातंजनकरजी के शिष्य पंडित चिदानंद नगरकर। पंडित बालासाहेब उमड़ेकर कुंडलगुरु ग्वालियर संस्थानमे राजगायक थे। उन्होंने दक्षिण में प्रचलित परंतु उत्तर में लुप्तप्राय कई रागों का अभ्यास करके उनका पुनराविष्कार किया और उन रागोंको प्रचारमे लानेका प्रयास किया। जनरंजनी रागका वर्णन उन्हें रागलक्षणम् , रागबोधिनी आदि ग्रंथोंमे मिला। पंडित बालासाहेब उमड़ेकरजीने उनके पुस्तक "राग सुमनमाला" भाग १, तथा पंडित चिदानंद नगरकरजीने "चित् आनंद " इस पुस्तक में राग का वर्णन किया है। दोनों विद्वानों की रागकल्पना में कई समान स्थल है और कुछ फर्क भी है। नीचे दोनों पुस्तकोंके सम्बंधित अंश की फोटो दी है, जिससे दोनों प्रकारों का स्वरुप हम जान सकते है।

"चित् आनंद "

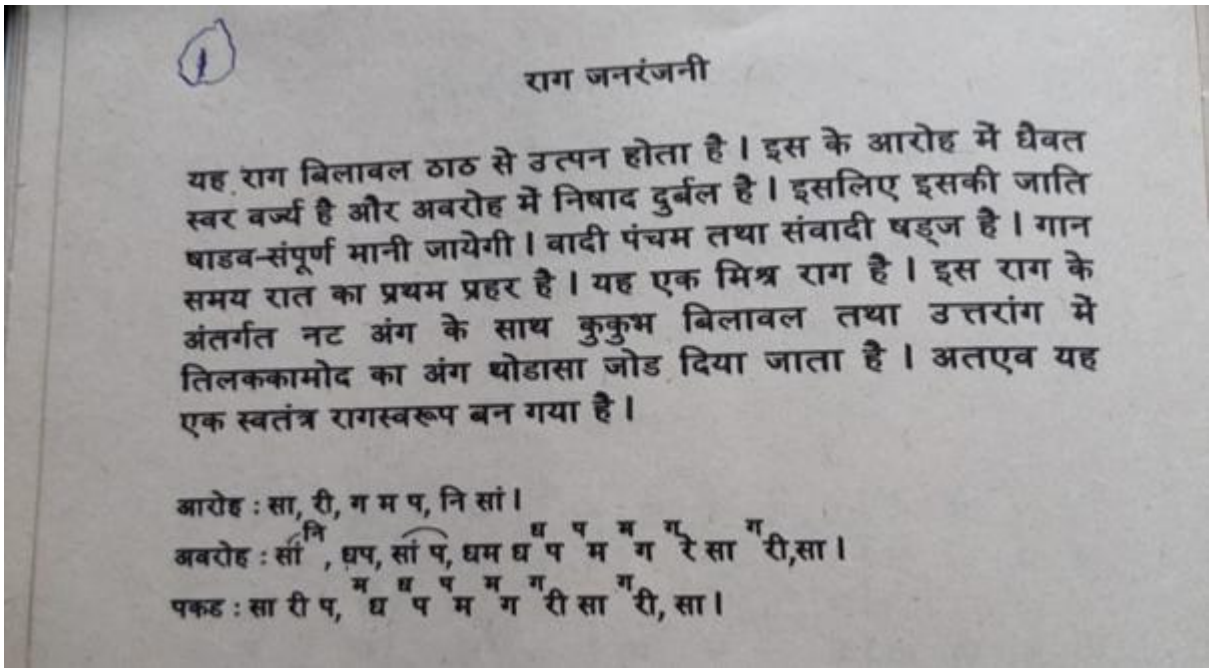

(1)

राग जनरंजनी

यह राग बिलावल ठाठ से उत्पन होता है। इस के आरोह में धैवत स्वर वर्ज्य है और अवरोह में निषाद दुर्बल है। इसलिए इसकी जाति षाडव-संपूर्ण मानी जायेगी। वादी पंचम तथा संवादी षड्ज है। गान समय रात का प्रथम प्रहर है। यह एक मिश्र राग है। इस राग के अंतर्गत नट अंग के साथ कुकुभ बिलावल तथा उत्तरांग में तिलककामोद का अंग थोडासा जोड दिया जाता है। अतएव यह एक स्वतंत्र रागस्वरूप बन गया है।

आरोह : सा, री, ग म प, नि सां।
अवरोह : सां नि, धप, सां प, धम ध प म ग रे सा ग री,सा।
पकड : सा री प, म ध प म ग री सा ग री, सा।

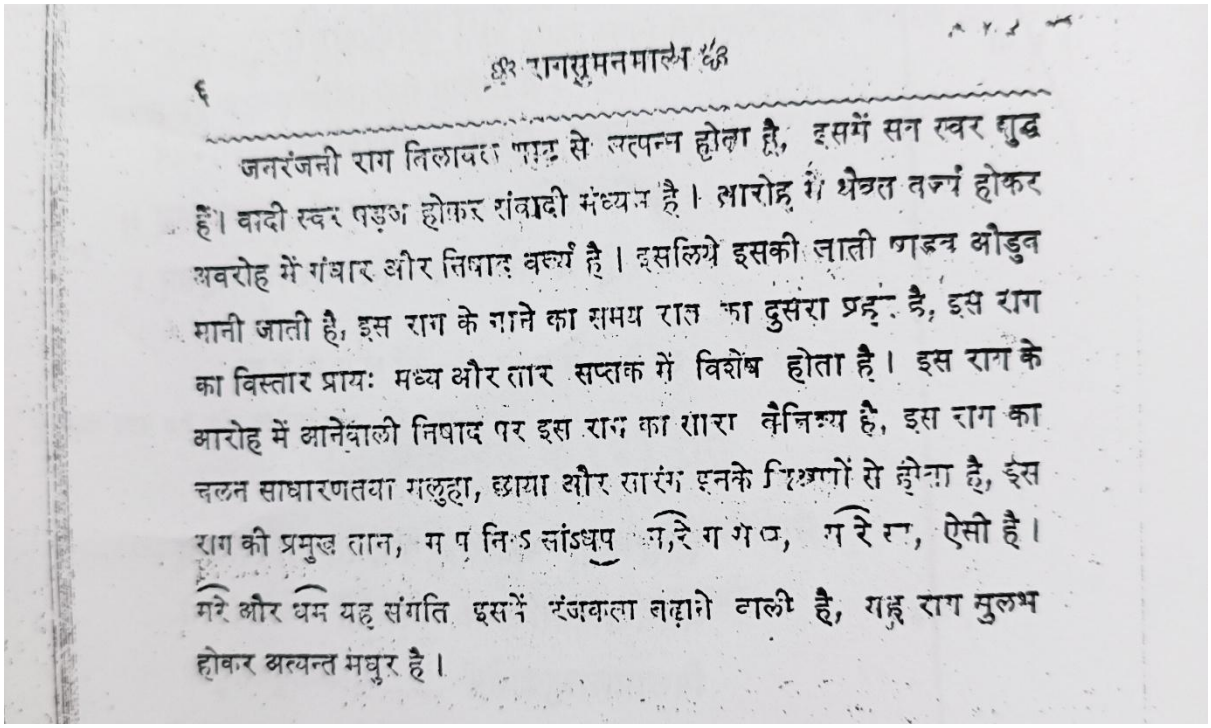

जनरंजनी राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है, इसमें सब स्वर शुद्ध हैं। वादी स्वर षड्ज होकर संवादी मध्यम है। आरोह में धैवत वर्ज्य होकर अवरोह में गंधार और निषाद वर्ज्य है। इसलिये इसकी जाती षाडव औडुव मानी जाती है, इस राग के गाने का समय रात का दुसरा प्रहर है, इस राग का विस्तार प्रायः मध्य और तार सप्तक में विशेष होता है। इस राग के आरोह में आनेवाली निषाद पर इस राग का सारा वैचित्र्य है, इस राग का चलन साधारणतया गलुहा, छाया और सारंग इनके मिश्रणों से होता है, इस राग की प्रमुख तान, म प नि ऽ सांऽधप म,रे ग म प, म रे सा, ऐसी है। मरे और धम यह संगति इसमें रंजकता बढ़ाने वाली है, यह राग सुलभ होकर अत्यन्त मधुर है।

आरोहावरोह स्वरूप

सा, रे ग म प, निऽ,सां । सां ऽ धप म,रे ग म प, म रे सा

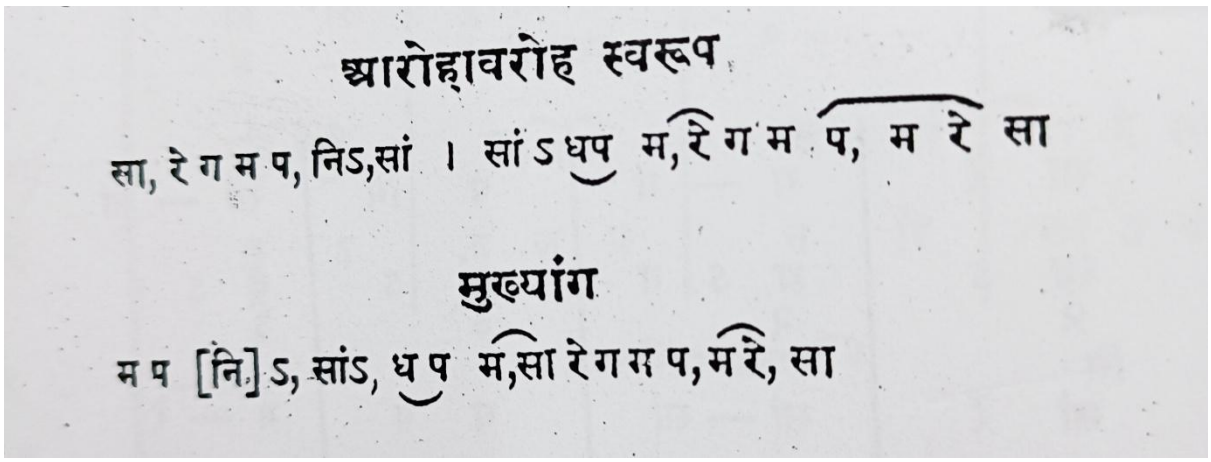

मुख्यांग

म प [नि] ऽ, सांऽ, ध प म,सा रे ग ग प, मरे, सा

आज के ऑडियो में हम सर्वप्रथम राग जनरंजनी का कर्नाटक संगीत में जो रागस्वरुप है वह सुनेंगे- गायक श्री. आर के मूर्ति, बाद में पंडित बालासाहेब उमड़ेकरजी की पौत्री सौ गीतिका उमड़ेकर मसूरकरजी ने गायी हुई दो बंदिशें सुनेंगे और अंत में पंडित चिदानंद नगरकर जी ने गाया हुआ राग जनरंजनी का अंश सुनेंगे।

आभार: श्री. श्रीराम उमड़ेकर, सौ. गीतिका उमड़ेकर मसूरकर, पंडित यशवंत महाले

01-08-2026.

Link to the list of 180+ Raga of the month articles @ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx